

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 28, परमेश्वर के प्रिय बच्चे, इफिसियों 5:1-21

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह सत्र 28 है, परमेश्वर के प्रिय बच्चों, इफिसियों 5:1-21।

हमारी बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

अतीत में, हमने इफिसियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए कुछ व्याख्यान दिए हैं, और हमने पॉल द्वारा लिखी इस अद्भुत पुस्तक की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर किया है। जैसा कि आपको पिछले व्याख्यान से याद होगा, हम अध्याय चार को देख रहे थे और अध्याय चार इन विपरीत पैटर्न के साथ कैसे समाप्त होता है। मैंने आपका ध्यान उन सद्गुणों और दोषों की ओर आकर्षित किया जो हो रहे थे और वास्तव में क्रोध, भाषण के प्रभाव और कार्य नैतिकता जैसे विषयों पर व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित किया।

मैंने आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि हमें इस कोमलता को विकसित करने में सक्षम होना चाहिए जैसा कि पॉल ने चर्च में इस एकता को विकसित करने के लिए कहा है। अध्याय एक से हम जो चर्चा कर रहे थे, उस पर वापस न जाते हुए, मैं यहाँ से जारी रखना चाहूँगा क्योंकि मैंने आपको याद दिलाया कि अध्याय चार पत्र के नैतिक भाग से शुरू होता है। इसलिए, उस नैतिक भाग के बाद, पॉल ने अध्याय चार में कई गंभीर बातें कही।

और जैसे ही वह पाँचवाँ अध्याय खोलता है, वह पाँचवें अध्याय में चर्चा शुरू करने के लिए एक अनुमान लगाता है। यह दिलचस्प है, इस बारे में बात करने के बाद कि आंतरिक गतिशीलता को कैसे काम करना है, कैसे लोगों को चोरी करने की ज़रूरत नहीं है, उदाहरण के लिए, लेकिन कड़ी मेहनत करनी है ताकि वे मदद कर सकें, वे कई अन्य लोगों के लिए लाभकारी हो सकें, उन्हें अश्लील अभिव्यक्तियों से कैसे बचना चाहिए ताकि लत अन्य लोगों को शिक्षित करे।

इन सब बातों के बावजूद, आपको लगता है कि उसे बस आगे बढ़ जाना चाहिए। लेकिन देखिए कि वह पाँचवें अध्याय को कैसे शुरू करता है। अध्याय पाँच, श्लोक एक और दो में लिखा है, इसलिए, इसलिए, परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनो।

इसलिए, प्यारे बच्चों की तरह परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनो और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया, परमेश्वर के लिए एक सुगंधित भेंट और बलिदान। यह शुरुआत में एक बहुत ही आसान कथन लगता है, लेकिन यह बिल्कुल वैसा नहीं है। वास्तव में, आप इसलिए से शुरू होने वाले वाक्य को देखते हैं, पिछली चर्चा पर निर्माण करते हैं, और कहते हैं, मैं आपको इस बारे में निर्देश दे रहा हूँ कि विश्वासियों को एक विशेष पहचान ढाँचे के भीतर खुद को कैसे संचालित करना है।

हम यीशु मसीह के अनुयायी हैं; हमने मसीह को एक निश्चित तरीके से सीखा है; हम ऐसे लोगों के रूप में नए कपड़े पहन रहे हैं जो परमेश्वर की छवि में, भलाई और धार्मिकता में बनाए गए हैं। और इसलिए, इस पहचान के मुद्दे के साथ जो उसने आगे रखा है, अब वह इसे रिश्तेदारी के एक बहुत ही विशिष्ट ढांचे पर रखता है। जैसा कि आप जानते हैं, हमने यहाँ रिश्तेदारी के बारे में बहुत बात की है, लेकिन देखें कि पॉल इसे यहाँ कैसे तैयार कर रहा है।

यहाँ नैतिक निर्देश कोई कानूनी ढाँचा नहीं है। मैंने अक्सर कहा है कि अगर आप शांति चाहते हैं, तो आपको इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि शांति न्यायालय में नहीं जीती जाती। अगर आप शांति चाहते हैं, तो शांति उस व्यक्ति से मिलकर नहीं मिलती जिसने आपको अपमानित किया है और यह साबित करके कि कौन सही है या गलत, शांति मिलती है।

शांति अक्सर सम्मान के ढांचे के भीतर प्राप्त की जाती है, न कि किसी बात को गलत साबित करने या स्वीकार करने के विवाद के ढांचे के भीतर। यह गर्व महसूस करने या सफल महसूस करने के लिए है, और यह दूसरे व्यक्ति को हीन और असफल महसूस कराता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति असफल नहीं होना चाहता। वास्तव में, यदि कोई आपको किसी खास तरह का व्यवहार अपनाने के लिए मजबूर करता है, तो संभवतः आपके पास ऐसा करने की प्रेरणा नहीं होगी क्योंकि आपको लगता है कि जब भी आप उस खास व्यवहार को प्रदर्शित करेंगे, तो दूसरे व्यक्ति को लगेगा कि उन्हें यह तय करने का अधिकार है कि आप अपना जीवन कैसे जिएं।

पॉल ने बताया कि ईसाई नैतिकता बहुत हद तक इसी तरह है। क्या करें और क्या न करें, यह स्पष्ट है, लेकिन उन्हें परिवार के ढांचे के भीतर रखा गया है। यहाँ, वह एक महत्वपूर्ण गुण को रेखांकित करने जा रहा है जो अब तक इफिसियों में बार-बार प्रकट हुआ है और जो हमारी चर्चा के दौरान फिर से प्रकट होगा: प्रेम।

तो बस एक मिनट के लिए उस शब्द, प्यार, के बारे में सोचिए। यह एक प्रेमपूर्ण रिश्ते के भीतर हासिल होने वाला है। यह ऐसा नहीं होगा कि कोई दुष्ट दादा आपकी छोटी सी गलती पर आपके सिर पर वार करने का मौका तलाश रहा हो।

आपको डर और आतंक में जीना पड़ता है क्योंकि आपको नहीं पता कि क्या हो रहा है। अगर आप इस तरह से जीते हैं, तो आप सभी नियमों का पालन कर सकते हैं, लेकिन आप डर में रह सकते हैं। और अंत में, जो कुछ भी होता है वह आपको कैद करने के बजाय सद्भावना के लिए होता है।

दार्शनिकों ने कभी-कभी नैतिक सिद्धांतों के बारे में बात की है जब इसे एक निश्चित तरीके से अपनाया जाता है, जो जेल बन जाता है जिसके भीतर लोग अपने जीवन को जीना पसंद करते हैं। हमें इफिसियों में ईश्वर के बच्चों के रूप में मुक्त होना चाहिए। और इसलिए वह वहाँ अन्य कल्पना करता है, वहाँ नोट करता है, कहता है कि प्यारे बच्चों के रूप में ईश्वर की नकल करो।

मैं आपका ध्यान दो बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं ईश्वर की नकल करने वालों की अभिव्यक्ति को समझने में थोड़ा और समय लगाऊँगा। लेकिन जिस पर मैं थोड़ा प्रकाश डालूँगा और अगले व्याख्यान में चर्चा करूँगा, वह है प्यारे बच्चों की धारणा।

आपने शायद चर्च या अन्य जगहों पर यह कहते हुए सुना होगा कि प्राचीन संस्कृति में, पुरुष या पति प्रेम करना नहीं जानते थे। और वास्तव में वे कभी-कभी ऐसा रवैया अपनाते थे कि वे उदासीन होते थे; वे कानूनवादी होते थे, और वे घर के सदस्यों पर अपेक्षाएँ थोपते थे। यहाँ पॉल कुछ और ही सुझाव दे रहा था।

पॉल चर्च को यह सुझाव दे रहे थे कि, वास्तव में, बच्चों और उनके पिता के बीच एक प्रेमपूर्ण संबंध कुछ ऐसा है जिसकी सराहना की जाती है और इस हद तक स्वीकार किया जाता है कि वह वास्तव में इसे भगवान और बच्चों के बीच एक आदर्श संबंध के रूप में उपयोग कर सकता है। आपको शायद याद होगा कि पिछले व्याख्यान में, मैंने एक कथन दिया था जिसने अक्सर विभिन्न स्थितियों में गंभीर विचार को उकसाया था। और वह था, आप वह कैसे दे सकते हैं जो आपके पास नहीं है? हम केवल उस चीज़ का हिस्सा दे सकते हैं जो हमारे पास है।

और अगर हमें प्रेम नहीं मिला है, तो हम प्रेम नहीं दे सकते। पौलुस कलीसिया को प्रेम करने और दूसरों के साथ प्रेमपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए बुला रहा है। लेकिन देखिए कि वह इसे कैसे स्थापित करने जा रहा है।

वह यह कहने के लिए इसे स्थापित करने जा रहा है, मैं जानता हूँ कि तुम प्यारे बच्चे हो इसलिए जब वह कहता है कि प्यारे बच्चों की तरह परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनो। वास्तव में, वह कण एक तुलनात्मक कण हो सकता है जिसका अनुवाद परमेश्वर के बच्चों की तरह किया जा सकता है, यह कहते हुए कि, तुम जानते हो कि परमेश्वर के प्यारे बच्चे कैसे व्यवहार करेंगे, इसलिए उस तरह व्यवहार करो।

या ईश्वर की संतान के रूप में, जिसका अनुवाद हमारी अधिकांश अंग्रेजी बाइबलों में उचित रूप से इस अर्थ में किया गया है कि चूँकि आप ईश्वर की संतान हैं जिन्हें वास्तव में प्यार किया जाता है, इसलिए आप प्रिय हैं। और इसलिए, आपको प्यार मिला है। और आप संडे स्कूल, जॉन 3, 16 से जानते हैं, है न? ईश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपना इकलौता बेटा दे दिया।

अवाना गए हैं, तो आप शायद रोमियों 5, श्लोक 8 से कुछ जानते होंगे। परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह प्रदर्शित किया कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरा। इसलिए, यदि आप हमारे साथ इस मार्ग का अनुसरण करने वाले आस्तिक हैं, तो हम आभारी होंगे। इफिसियों के पाठकों के लिए, तो, उन्हें प्यार किया गया है।

उन्हें वह प्रेम मिला है जिसका ज़िक्र पौलुस ने इस पत्र में पहले ही महान प्रेम के रूप में किया है। कभी-कभी, उदाहरण के लिए, परमेश्वर के प्रेम को समझाने के लिए, उसने अध्याय 3 में सभी प्रकार की अतिशयोक्ति का इस्तेमाल किया। प्यारे बच्चों के रूप में, परमेश्वर के महान प्रेम के

प्राप्तकर्ता और लाभार्थी के रूप में, अब आपसे अपने पिता की जीवनशैली का अनुकरण करने का आग्रह किया जा रहा है, जिन्होंने आपके प्रति ऐसा प्रेम दिखाया है।

मुझे कुछ गलतफहमियों को दूर करने दें। इससे मुझे वास्तव में मदद मिली है। मैं अपने पश्चिमी विद्वान मित्रों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने एलिया को कुछ नारीवादी ढाँचों में लाया और इसे बहुत आगे ले गए।

मैं कहती हूँ कि मेरी सोच काफी हद तक नारीवादी हो सकती है। मेरा पालन-पोषण एक अकेली माँ ने किया है। मेरी दो लड़कियाँ हैं।

मैं अपनी लड़कियों को यह सिखाना चाहती हूँ कि वे सफल हो सकती हैं और एक ऐसी दुनिया में आगे बढ़ सकती हैं जहाँ कई क्षेत्रों में मुख्य रूप से पुरुषों का वर्चस्व है। जैसा कि हम कार्यालयों और पदों पर महिलाओं की बढ़ती संख्या को देखते हैं, मैं उन लोगों में से एक हूँ जो इसकी गहराई से सराहना करते हैं और अपने बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं और अपनी माँ का सम्मान करना चाहते हैं, एक अकेली माँ जिसने मुझे पाला और व्यवसाय में बहुत मेहनत की। इसलिए, मैं महिलाओं का पूरा सम्मान करती हूँ, लेकिन मुझे नारीवादी विमर्श में कुछ अतिवादों को स्पष्ट करने दें जो पॉल पर हमारी चर्चाओं में सामने आए।

जिन लोगों ने इस नारीवादी एजेंडे को अपनाया, खास तौर पर 80 और 90 के दशक में हमारे लेखन में, खास तौर पर न्यू टेस्टामेंट में, उन्होंने कुछ पितृसत्तात्मक धारणाओं पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया और ऐसा दिखाया जैसे पिता अपने बच्चों से प्यार नहीं करते। आज, मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि हमारे पास जो डेटा है, वह इसका समर्थन नहीं करता। विद्वत्ता में, हमने एनाक्रोनिज़्म शब्द का इस्तेमाल इस तथ्य को समझाने के लिए किया है कि हम एक आधुनिक धारणा को उठाते हैं और इसे प्राचीन दुनिया पर थोपते हैं और यह कहना शुरू कर देते हैं कि वे इसी तरह रहते हैं।

पिता वास्तव में अपने बच्चों से प्यार करते हैं। और जब पिता अपने बच्चों से प्यार करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं, तो यह बहुत सराहनीय है। अन्यथा, जब पॉल ने लिखा और कहा कि प्यारे बच्चों के रूप में भगवान की नकल करो, तो उसके पाठक उससे संबंधित भी नहीं हो सकते।

आज, अगर उनके पिता हमेशा उन्हें धमकाते, दबाते या किसी भी तरह से उनके साथ व्यवहार करते, तो वे इससे सहमत नहीं हो पाते। मेरे कुछ दोस्त हैं जो अपने माता-पिता दोनों के साथ पले-बढ़े हैं, लेकिन वे बताते हैं कि उनके पिता इतने क्रूर थे कि वे अपने पिता को भी नहीं बुलाना चाहते। यह उनका स्वभाव है।

यहाँ, वह कहता है, आप ईश्वर के प्रिय बच्चे हैं, और मैं आपसे ईश्वर के प्रिय बच्चों के रूप में ईश्वर का अनुकरण करने के लिए कह रहा हूँ। इसलिए, ईश्वर के प्रिय बच्चों को योग्य बनाने के बाद, आइए देखें कि अनुकरण की अवधारणा क्या है। ग्रीको-रोमन दुनिया में देवताओं या देवताओं की नकल एक सामान्य घटना थी।

जैसा कि आपको हाई स्कूल में पढ़ी गई कुछ बातों से याद होगा, आपको शायद एहसास हुआ होगा कि आप जानते हैं कि कुछ ग्रीक देवताओं ने अलग-अलग देवियों से शादी भी की थी। और उनके बच्चे हैं, और कुछ बच्चों के नाम भी बहुत अच्छे हैं, और आप उन सभी का अनुसरण करना शुरू कर देते हैं। संबंधों के मामले में किसी देवता की नकल करने की अवधारणा बहुत आम थी।

हम इसे ग्रीक लेखन में पाते हैं, हम इसे रोमन लेखन में पाते हैं, और इसलिए प्रत्येक देवता का अपना एक विशेष गुण होता है। उदाहरण के लिए, आपने वास्तव में एफ्रोडाइट के बारे में सुना होगा। इसलिए, विशेष रूप से अमेरिकी अनुयायियों, मुझे पता है कि आप एफ्रोडाइट के बारे में कुछ जानते हैं।

आप कभी-कभी अपने दोस्तों के साथ इस बारे में बात करना पसंद करते हैं। तो, चलिए, उदाहरण के लिए, इस बारे में बात करते हैं। और आप जानते हैं कि एफ्रोडाइट प्रेम की देवी है, है न? हाँ, क्योंकि इन देवताओं में कुछ खास गुण होते हैं।

इसीलिए वे उन्हें योग्य मानते हैं। मैं एक ऐसे व्यक्ति का जिक्र करूँगा जिसके बारे में शायद आप नहीं जानते होंगे और जिसे मैं आज हमारी चर्चा में लाऊँगा वह है बैकस। बैकस, उसका दूसरा नाम डायोनिसस है।

वह शराब का देवता है। मेरा मतलब है, अगर आपको शराब पीना पसंद है, तो आप उससे खुद को जोड़ सकते हैं। और आपके पास उपचार की देवी है, या बीमारी की देवी है जो उदाहरण के लिए एस्क्लेपियस को ठीक करती है।

इन देवताओं के गुणों को परिभाषित करना। इसलिए, दार्शनिक, नैतिकतावादी, या बयानबाज़ कभी-कभी अपने पाठकों या श्रोताओं से आग्रह करते हैं कि वे समाज में मौजूद विभिन्न देवताओं के सद्गुणों का अनुकरण करें। पॉल द्वारा एशिया माइनर के ईसाइयों को यह लिखना कि वे ईश्वर का अनुकरण करें, बहुत दूर की बात नहीं है।

क्योंकि वे एक विशेष ब्रह्माण्ड संबंधी ढांचे या विश्वदृष्टि के भीतर काम करते हैं जो आज पश्चिमी दुनिया में हमारे पास नहीं है। मुझे कहना होगा कि पश्चिमी दुनिया के बाहर, बहुत सी संस्कृतियाँ इस विश्वदृष्टि को साझा करती हैं। और वह यह है कि भौतिक और अभौतिक दुनिया के बीच कोई ऐसा स्पष्ट अंतर नहीं है।

आध्यात्मिक दुनिया और भौतिक दुनिया के बीच कोई खास अंतर नहीं है। भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक ब्रह्मांड का हिस्सा बनते हैं। इसलिए, कोई भी व्यक्ति इस विशेष जीवन में अपना जीवन जीते समय मदद के लिए किसी दिव्य व्यक्ति को बुला सकता है।

इस प्राचीन दुनिया में ईश्वर की नकल करना इतना दूर की बात नहीं है। वास्तव में, उनमें से कुछ की पौराणिक कथाएँ इतनी अलग हैं कि वे कहते हैं कि कभी-कभी कुछ देवता, अपने गुणों के आधार पर, अपने गुणों को दिखाने और अपने भक्तों के प्रति अपनी दया दिखाने के लिए अलग-

अलग जगहों पर मानव रूप में प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, आपको बरनबास और पॉल के बारे में कहानी याद होगी।

जब उन्होंने सोचा कि वे ईश्वर हैं जो देह में आए हैं और वे आकर उनकी पूजा भी करना चाहते हैं, तो उन्होंने कहा, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, हम ईश्वर नहीं हैं। यह अवधारणा इस प्राचीन दुनिया में प्रचलित थी। ईश्वर की नकल करना इतना दूर की बात नहीं थी कि हम पश्चिमी दुनिया में इसके बारे में सोच सकें।

दूसरा, यहाँ जिस मुख्य गुण का अनुकरण किया जाना चाहिए वह है प्रेम। इसलिए, यहाँ जिस ईश्वर की बात हो रही है, जिसने अपने बच्चों से प्रेम किया है और उन्हें उन्हें प्यारे बच्चे कहने की अनुमति दी है, वह यह है कि उन्हें उसके प्रेम के गुण का अनुकरण करना चाहिए, जिस पर उसने अभी प्रकाश डाला है कि उन्हें यह गुण प्राप्त हुआ है। आप यहाँ कुछ जानना चाहते हैं क्योंकि हम रिश्तेदारी के बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि मैंने इस पर कुछ समय बिताया है।

आप एक देवता की नकल कर रहे हैं, लेकिन इस बार वह देवता सिर्फ देवता से कहीं बढ़कर है। देवता का भक्त के साथ व्यक्तिगत संबंध है। इसलिए, जिस भगवान की बात की जा रही है, वह कोई दूर का भगवान नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा भगवान है जिसके साथ उनके प्यारे बच्चों की तरह व्यक्तिगत संबंध हैं।

अंत में, यहाँ परमेश्वर की नकल करने की अवधारणा पर आपका ध्यान आकर्षित करें। मसीह को इस बात के आदर्श के रूप में लाया जाएगा कि वे कलीसिया में एक दूसरे से कैसे प्रेम कर सकते हैं। क्या आप देखते हैं कि यहाँ क्या हो रहा है? वह कहता है कि तुम प्यारे बच्चे हो।

इससे आश्चर्यचकित मत होइए। आप वास्तव में प्यारे बच्चे हैं। और आप परमेश्वर के प्यारे बच्चे हैं।

मैं चाहता हूँ कि तुम भी उसी के आधार पर अपने पिता परमेश्वर के सद्गुणों का अनुकरण करते हुए प्रेम करो, जिसने तुम्हारे प्रति महान प्रेम प्रदर्शित किया है। अध्याय 1. फिर वह कहेगा, तुम्हारा बड़ा भाई तुम्हारा आदर्श हो सकता है। तुम्हारा बड़ा भाई यीशु।

इसलिए अब वह यीशु को आदर्श के रूप में पेश करते हैं और यीशु ने जो प्रेम प्रदर्शित किया, उसे आदर्श प्रेम के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो विश्वास के समुदाय में मौजूद होना चाहिए। यदि वे व्यावहारिक रूप से जानना चाहते हैं कि समुदाय में प्रेम को कैसे व्यक्त किया जाना चाहिए या व्यक्त किया जाना चाहिए, तो उन्हें यह देखना चाहिए कि यीशु ने यह प्रेम कैसे दिखाया। प्रेम के बारे में बात करना और यह बताना कि ये चीज़ें किस तरह ईश्वर की नकल करती हैं, महत्वपूर्ण है।

मैंने सोचा कि मैं आपको थोड़ा सा ताज़ा कर दूँ और आपको संदर्भ से परिचित करा दूँ। मैं इसे ज़्यादा नहीं करना चाहता। मैं आपको बस कुछ चीज़ें दिखाना चाहता हूँ ताकि आपको पता चले कि मैं जो कह रहा था वह प्रचलित बात है।

मैं आपको सिर्फ एक या दो उदाहरण दिखाना चाहता हूँ, ताकि वहाँ क्या हो रहा है, इसका सबूत मिल सके। फिलो एलेक्जेंड्रिया का एक हेलेनिस्टिक यहूदी लेखक है। वह लिखता है, क्योंकि

प्राचीन लोगों में से एक ने जो कहा था, वह सच है, कि मनुष्य ईश्वर के समान दयालुता दिखाने से बढ़कर कुछ नहीं कर सकता।

इससे बड़ा क्या भला हो सकता है कि वे ईश्वर का अनुकरण करें? वास्तव में, यदि आप स्क्रीन से अनुसरण करते हैं, तो मैंने वहाँ ग्रीक शब्द इसलिए रखा है क्योंकि ग्रीक शब्द इफिसियों में हमारे द्वारा लिखे गए निर्माण से बहुत मिलते-जुलते हैं। मैं आपको ग्रीक संदर्भ के बारे में भी कुछ दिखाना चाहता हूँ। मुसोनियस रूफस, बेशक, एक दार्शनिक हैं जिन्हें मैं पसंद करता हूँ।

वास्तव में, उनके कार्य और अंश बहुत कम हैं। एक समय पर, मैं उनमें से प्रत्येक को उसी तरह जानता था जैसे मैं अपने अधिकांश नए नियम के ग्रंथों को जानता था। मुझे बस यह आदमी पसंद है।

वह लिखते हैं कि धरती पर सभी प्राणियों में से केवल मनुष्य ही ईश्वर जैसा है। उसमें भी वही गुण हैं जो ईश्वर में हैं, क्योंकि हम देवताओं में भी विवेक, न्याय, साहस और संयम से बढ़कर कुछ नहीं सोच सकते। इसलिए, ईश्वर इन गुणों के कारण लालच के सुखों से अप्रभावित है, इच्छा, ईर्ष्या और जलन से श्रेष्ठ है, और उच्च विचार वाला, परोपकारी और दयालु है।

क्योंकि ईश्वर के बारे में हमारी धारणा ऐसी ही है। इसी तरह, जब मनुष्य प्रकृति के अनुरूप जीवन जी रहा हो, तो उसे भी ईश्वर जैसा ही समझना चाहिए। और ईश्वर जैसा बनकर और ईर्ष्या का पात्र बनकर, वह तुरंत खुश हो जाएगा।

क्योंकि हम केवल खुश लोगों से ईर्ष्या करते हैं। मुसोनियस का कहना यह है कि जानवर भगवान जैसे नहीं होते।

मनुष्य ईश्वर के सबसे करीब है जिसके बारे में हम सोच सकते हैं। चूँकि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया है, इसलिए मनुष्य को उसके गुणों का अनुकरण करना सीखना चाहिए। कभी-कभी, जब मैं इनमें से कुछ दार्शनिकों को पढ़ता हूँ तो मैं हैरान हो जाता हूँ।

और शायद जब आप इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हैं, तो आप शायद पूछ रहे होंगे कि इस आदमी ने इन सभी दार्शनिकों को इस तरह से पढ़ने में अपना समय क्यों बिताया? खैर, इसे लत कहें। और मैं इसे स्वीकार करूँगा। इन लोगों के बारे में मुझे जो एक बात पता चली वह यह है कि वे तीखे दार्शनिक, बुद्धिमान, होशियार लोग हैं, और फिर भी ईश्वर की अपनी अवधारणा में बहुत धार्मिक हैं, ईश्वर निर्माता के रूप में, शक्ति का स्रोत, भले ही वे देवता वे देवता नहीं हैं जिन्हें हम जानते हैं, इसलिए हम उन्हें वास्तविक देवता कह सकते हैं, वे बहुत, बहुत धार्मिक थे।

मुसोनियस ने कहा कि यह परमेश्वर है जिसने हमें बनाया है, और हमें इस परमेश्वर का अनुकरण करना चाहिए। इफिसियों 5:1 और 2 में, वह हमें प्यारे बच्चों के रूप में परमेश्वर का अनुकरण करने के लिए बुला रहा है। और आगे बढ़ने से पहले मैं इसमें से एक या दो बातें, विशेष रूप से चार बातें आपके लिए उजागर करना चाहता हूँ।

यहाँ प्यारे बच्चों की धारणा विशेष रूप से अध्याय 1, श्लोक 5 में गोद लेने की धारणा को फिर से शुरू करती है, कि हम गोद लिए गए बच्चे हैं। यदि आपको अध्ययन का सत्र याद है, तो मैंने इसे एक बेदम आह्वान कहा था। प्यारे या प्यारे बच्चों की भाषा पिता के साथ संबंध का संकेत देती है।

पिता के सद्गुणों की नकल करने की धारणा, जिसे मैं भूल गया हूँ, आम थी जैसा कि रेखांकित किया गया है। और इसलिए, इस संबंध में रिश्तेदारी का दायित्व बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। जब वह अपने पिता की नकल करने की आवश्यकता का आह्वान करता है, तो बच्चे अब समाज और सांस्कृतिक मानदंडों में जो सही है उसे करने की अपनी आवश्यकता को महसूस करना शुरू कर रहे हैं।

उन्हें अपने पिता का अनुकरण करने की आवश्यकता है, और उन्हें अपने पिता के प्यार का अनुकरण करने की आवश्यकता है। मुझे इनमें से एक लेखक, स्पूडो-इसोक्रेट्स पसंद है, जिसने कहा, आपको यह विचार करना चाहिए कि कोई भी एथलीट अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ प्रशिक्षण लेने के लिए इतना कर्तव्यबद्ध नहीं है जितना कि आप इस बारे में सोचते हैं कि आप अपने पिता के जीवन के तरीके से कैसे अलग हो सकते हैं। आपको अपने पिता के गुणों का अनुकरण करने के लिए दौड़ने के बारे में सोचना चाहिए।

और यहाँ वह कहता है, पॉल कहता है, प्यारे बच्चों की तरह परमेश्वर के अनुकरणकर्ता बनो, और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने हमारे लिए खुद को दे दिया, परमेश्वर के लिए एक सुगंधित भेंट और बलिदान। जैसा कि मसीह ने खुद को दिया, वहाँ क्रिया पर ध्यान दें। उसने खुद को प्रेम से दिया। उसने इस अभिव्यक्ति और पिता के गुण के इस अनुकरण में प्रेम प्राप्त नहीं किया।

यह वह प्रेम है जिसके कारण उसने अपने पुत्र, यीशु मसीह को दे दिया, और जिसके कारण यीशु ने बदले में हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। और इसलिए, प्रभु यीशु मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम यहाँ पहली सदी के ईसाइयों के रूप में चुनौती दी गई है कि हम वास्तव में आत्म-समर्पण के तरीके से प्रेम करें। यह चुनौतीपूर्ण है, है न? हाँ।

और जब आप ऐसा करते हैं, तो यह सुंदर होता है। यह लगभग एक मीठी सुगंध की तरह है क्योंकि, जैसा कि यीशु ने ये सभी चीजें दीं, उसका स्वाभाविक परिणाम वही है जो सुंदर हो जाता है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कैसे परमेश्वर ने आप और मेरे जैसे पापियों को चुना, मसीह ने जो किया उसके कारण हमें धूल से साफ किया, और हमें परमेश्वर की संतान कहलाने का अवसर दिया?

मुझे याद है कि कई साल पहले जब मैंने जॉन के अध्याय 1, श्लोक 12 से यह अंश पढ़ा था, जिसमें लिखा था, वाह! मैंने देखा कि कैसे, घर में अपने पिता के साथ बड़े हुए बिना, मैं अपने स्वर्गीय पिता से जुड़ रहा था। जब यह देने वाला प्रेम परमेश्वर के बच्चों के बीच मौजूद होता है, तो यह इतना सुंदर हो जाता है कि पॉल सुगंधित भेंट और परमेश्वर के लिए बलिदान जैसे शब्दों का उपयोग करेगा। मैं आपको उस मीठी सुगंध की धारणा के बारे में याद दिलाना चाहता हूँ।

यदि आप किंग जेम्स और अन्य का उपयोग कर रहे हैं, तो वे इसे समझाने के लिए मीठी सुगंध का उपयोग करते हैं। यह स्वीकार्य बलिदान के लिए एक अंतिम मुहावरा है। जब भगवान वास्तव में उस चीज़ को गले लगाते हैं और स्वीकार करते हैं जो पेश की जाती है।

मैं छवियों के बारे में सोच रहा था, और मैंने सोचा, ओह, क्या छवि होगी अगर मैं अच्छी सुगंधित मोमबत्तियाँ प्राप्त कर सकूँ और उन्हें जला सकूँ और उस लौ और सुगंध को आने दूँ। यह एक बलिदान है जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है। वास्तव में, पुराने नियम में, लेविटस में दो स्थानों पर, मैंने पाया कि पाठ कहता है, सारी चर्बी प्रभु है।

अब, उस पंक्ति को भूल जाइए जिसमें कहा गया है, सारा मोटापा भगवान का है। मीठी सुगंध पर ध्यान दें। एक दिन मेरे शिक्षण सहायक मेरे पास आए और कहा, मुझे लगता है कि हमें थोड़ा वजन बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि हम दोनों दुबले-पतले हैं।

और मैंने पूछा, क्यों? वह कहता है, हमारे पास प्रभु को चढ़ाने के लिए कुछ भी नहीं है। क्योंकि वह लेविटस पढ़ रहा था, और उसे वह महत्वपूर्ण पंक्ति मिली जिसके बारे में हम बात नहीं करते, कि सारी चर्बी प्रभु की है, और हमारे पास चढ़ाने के लिए कुछ भी नहीं है। अब, उस हिस्से को अनदेखा करें और सुगंध पर ध्यान दें।

यहाँ पौलुस का कहना वही है जो पुराने नियम में कहा गया है: कि स्वीकार्य भेंट एक मीठी सुगंध की तरह है। परमेश्वर के बच्चों के बीच जो प्रेम प्रदर्शित होता है, वह मिठास की भावना के साथ सामने आता है। लैव्यव्यवस्था 26, मैं तुम्हारे शहर को उजाड़ दूँगा, तुम्हारे पवित्र स्थानों को उजाड़ दूँगा, और मैं तुम्हारी सुखद सुगंध को नहीं सूँघूँगा, या तुम्हारी सुगंध को नहीं सूँघूँगा।

दूसरे शब्दों में, मैं आपकी पेशकश को स्वीकार नहीं करूँगा। यहाँ से, पौलुस जल्दी से आयत 3 और 4 पर चला जाता है। लेकिन, अब वह कहता है, प्यारे बच्चों की तरह परमेश्वर की नकल करो, और मसीह की तरह प्यार करो। जब आप ऐसा करेंगे, तो आपके प्यार की अभिव्यक्ति इस मीठी सुगंध की तरह आएगी।

लेकिन फिर आयत 3 को देखें, यह बहुत बड़ा, बहुत बड़ा कदम है। लेकिन, इसके विपरीत, व्यभिचार, और सब प्रकार की अशुद्धता, सब प्रकार का लोभ, तुम्हारे बीच में नाम तक न लिया जाए, जैसा कि पवित्र लोगों के बीच उचित है। कोई अशुद्धता, न मूढ़ता की बातचीत, न भद्दा मजाक, जो अनुचित हैं, बल्कि इसके बजाय, धन्यवाद दिया जाए।

क्या आप देख रहे हैं कि पॉल यहाँ क्या कर रहा है? आपको पॉल के बारे में कुछ तो जानना ही होगा। मुझे पॉल बहुत पसंद है। हाँ, कुछ लोगों को पॉल पसंद नहीं है।

मैं बस आपको बताना चाहता हूँ, मैं पॉल से प्यार करता हूँ। वह यहाँ जो कर रहा है वह बस प्रेम के सभी महत्वपूर्ण गुणों को दिखाना है। और उसने इस बारे में बात की है कि कैसे अपने आप को प्रेम में समर्पित करना, जब आप इसे मसीह के तरीके से करते हैं, तो यह कितना सुंदर और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला बन जाता है।

प्रेम की उस धारणा में, उन्होंने फिर भाषा को बदल दिया और इसे प्रेम की एक विकृत अभिव्यक्ति, अर्थात् यौन आदतों के साथ तुलना की, जहाँ कोई कहेगा, मैं प्रेम दिखा रहा हूँ, और फिर भी वास्तव में जो चल रहा है वह कुछ यौन इच्छाएँ हैं, अंदर की भावनाएँ, उन्हें कुछ देने के लिए नहीं, बल्कि कुछ पाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। यह भावना उन्हें खुद को संतुष्ट करने और किसी को कुछ न देने के लिए प्रेरित करती है। पॉल ने इस बात पर प्रकाश डाला कि परमेश्वर के प्यारे बच्चों को खुद को इससे दूर रखना चाहिए।

उन्होंने कहा कि इस हद तक कि, यहाँ तक कि इन पापों, यौन अनैतिकता, अशुद्धता, और लोभ या लालच का भी तुम्हारे बीच नाम तक नहीं लिया जाना चाहिए। वैसे, जब हम नामों के बारे में बात करते हैं, तो हम सोचते हैं कि नामकरण सिर्फ मनोरंजन के लिए नामकरण करना है। नामकरण या नाम के लिए यूनानी शब्द भी एक ऐसा शब्द है जिसका कभी-कभी प्रतिष्ठा के रूप में अनुवाद किया जा सकता है।

इसका जिक्र भी आपके बीच में नहीं होना चाहिए; यह बहुत ही दुखद है कि विश्वास के समुदाय के भीतर, यह उन चीजों में से एक नहीं है जिसे आप सुनना भी चाहते हैं कि यह मौजूद है। पॉल कहते हैं, इसे अपने से दूर रखें क्योंकि यह संतों के लिए अनुपयुक्त है। यह आपके योग्य नहीं है कि आप कौन हैं, ईश्वर के बच्चों के रूप में आपकी पहचान में।

यहाँ सूचीबद्ध पहले तीन यौन पाप हैं। यौन अनैतिकता, शब्द पोर्निया, उस शब्द पर ध्यान दें, क्योंकि मैं संक्षेप में उस शब्द पर वापस आऊँगा। अशुद्धता और अशुद्धता आमतौर पर यहूदी बलिदान प्रणाली से जुड़ी होती है, लेकिन कभी-कभी यौन अशुद्धता के संदर्भ में इसका उपयोग किया जाता है।

और लालच, जिसे कभी-कभी लालच की तरह लिया जाता है, जैसा कि हम अंग्रेजी में कहते हैं, लेकिन यह किसी को अपनी यौन इच्छा को संतुष्ट करने के लिए लालच करने की इच्छा भी है। आप देखेंगे कि अगले तीन दोष जो सूचीबद्ध हैं वे भाषण से संबंधित हैं। गंदी बातें, मूर्खतापूर्ण बातें, भद्दा मज़ाक।

पॉल ने छह ऐसी बुराइयों की सूची दी है जो बहुत गंभीर हैं, अगर मेरे पास उन्हें खोलने का समय हो, जो मुझे एहसास हो रहा है, मेरे पास इतना समय नहीं है कि मैं इस विशेष पाठ में जो कुछ भी कवर करना चाहता हूँ, उस पर खर्च कर सकूँ। तो, मुझे माफ़ करें, और मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि पहले तीन सेक्स से संबंधित हैं, दूसरे तीन, पहले तीन सेक्स से संबंधित हैं, और दूसरे तीन भाषण से संबंधित हैं। और पॉल इसका अंतर बताने जा रहा है।

अंदाज़ा लगाइए कि वह इसके विपरीत कितने गुणों का इस्तेमाल करने जा रहा है। वह एक बड़ा महत्वपूर्ण गुण निकालने जा रहा है जिसे धन्यवाद कहा जाता है। एक गुण।

उन्होंने जो छह बुराईयाँ सूचीबद्ध की थीं, उनके बीच एक गुण का प्रयोग किया। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि, हमारी पश्चिमी सभ्यता में, विशेष रूप से, धन्यवाद के गुण की सराहना नहीं की

जाती है? क्या आपने इस पर ध्यान दिया है? क्या आपने देखा है कि धन्यवाद को एक गुण के रूप में प्रस्तुत भी नहीं किया जाता है?

प्राचीन दुनिया में, धन्यवाद देना उन महान गुणों में से एक था जिसे एक सभ्य नागरिक प्रदर्शित करना चाहता था। वे कृतज्ञता की भावना के साथ जीते हैं। मैं हाल ही में रोमन स्टोइक में से एक, सेनेका को पढ़ रहा था, और जब मैं परोपकार, देने और अनुग्रह पर उनके ग्रंथ को पढ़ रहा था, तो मैं इस बात से हैरान था कि कैसे इस दार्शनिक ने, पॉल की तरह, उदारता, उदारता और कृतज्ञता पर जोर दिया, जब लोगों के पास इसकी कमी होती है, जब लोग इसकी सराहना नहीं कर सकते हैं, और कृतज्ञता से भरे नहीं हो सकते हैं, तो वे खुद के साथ शांति से नहीं रहते हैं।

वे अधिकार के साथ जीते हैं। कोई भी व्यक्ति उनके लिए जो अच्छा करता है, उसका दावा इस तरह किया जाता है मानो वे इसके हकदार हैं, इसलिए वे लोगों की सराहना नहीं करते। और यह दार्शनिक वास्तव में आगे बढ़ता है, जैसा कि पॉल अपनी शिक्षा में आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, कि धन्यवाद का गुण, जिसे वह स्वयं अपने पत्रों में प्रदर्शित करता है, एक ऐसा गुण है जो ईसाई समुदाय के साथ मिलकर काम करने के लिए मौजूद होना चाहिए।

धन्यवाद। लेकिन इससे पहले कि हम इस पर आगे बढ़ें, आइए वापस चलते हैं क्योंकि मैंने आपका ध्यान यौन अनैतिकता के लिए पोर्टिया शब्द की ओर आकर्षित किया है, और मुझे इसके साथ कुछ बातें स्पष्ट करने की आवश्यकता है। यह उन शब्दों में से एक है; यदि आप इस विषय पर विभिन्न स्थानों पर कुछ व्याख्यानों में जाते हैं, तो आप शायद यहाँ-वहाँ भ्रमित हो रहे होंगे।

यूनानी शब्द का अनुवाद यौन अनैतिकता के रूप में किया जाता है। आपकी ज्यादातर बाइबलों में, इस शब्द का अनुवाद व्यभिचार के रूप में किया गया है। इस शब्द का सामान्य अर्थ किसी भी तरह की यौन अनैतिकता है।

दरअसल, हमारी बाइबल में, कभी-कभी, हम इस शब्द का इस्तेमाल वेश्याओं और वेश्याओं के लिए करते हुए पाते हैं। विवाह में, इस शब्द का इस्तेमाल उस कारण को संदर्भित करने या उचित ठहराने के लिए किया जाता है जिसके कारण एक पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। और यहाँ तक कि यीशु ने भी कहा कि मत्ती में, अपवाद खंड की तरह, यही एकमात्र कारण है जिसके कारण एक पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है।

लेकिन आप जानना चाहते हैं कि प्राचीन यूनानी संस्कृतियों में यौन अनैतिकता को देखने के अलग-अलग तरीके हैं। यह व्यवस्था कई मायनों में महिलाओं के साथ बहुत अन्यायपूर्ण थी। जैसा कि आपको शायद याद होगा, हमारे पिछले व्याख्यानों में से एक में, मैंने आपका ध्यान इस ओर आकर्षित किया था कि कैसे पुरुषों को शादी करने और रखल रखने और सभी तरह के अनुचित काम करने की आज्ञा दी थी, जिसे पॉल हतोत्साहित करना पसंद करते हैं।

इसलिए, हम पाते हैं कि जब भी वे यौन अनैतिकता शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो इसका अर्थ महिला के पक्ष में होता है। एक महिला जो विवाहित है या एक महिला जो किसी विवाहित व्यक्ति के साथ संबंध बनाने की कोशिश कर रही है। इसलिए, महिला दोषी बन जाती है।

उस आदमी पर संदेह है। लेकिन यहूदियों के मामले में ऐसा नहीं है। यहूदियों के पास ऐसी चीज़ों के खिलाफ़ स्पष्ट नैतिक सिद्धांत थे।

और अगर आपको हाई स्कूल या कॉलेज में प्लेटो से इतना प्यार करना सिखाया गया है, तो मैं आपको यौन अनैतिकता पर प्लेटो के कुछ विचारों से अवगत कराता हूँ, जब बात उनके विचारों में इस भाषा के इस्तेमाल की आती है। प्लेटो कहते हैं, आदर्श रूप से, कोई भी व्यक्ति अपनी विवाहित पत्नी को छोड़कर किसी भी सम्मानित नागरिक महिला के साथ संबंध बनाने की हिम्मत नहीं करेगा। इसके अलावा, वेश्याओं में नाजायज और नाजायज बीज, या पुरुषों में बांझ बीज, प्रकृति के अंतर में।

वैकल्पिक रूप से, समलैंगिकता को पूरी तरह से दबाते हुए, हम इस बात पर जोर दे सकते हैं कि यदि कोई पुरुष किसी भी महिला के साथ संभोग करता है, चाहे वह किराए पर ली गई हो या किसी अन्य तरीके से खरीदी गई हो, सिवाय उस पत्नी के जिससे उसने पवित्र विवाह में, देवताओं के आशीर्वाद से विवाह किया हो, वहाँ धार्मिक भाषा पर ध्यान दें, उसे ऐसा किसी अन्य पुरुष या महिला को पता चले बिना करना चाहिए। यदि वह अपने मामलों को गुप्त रखने में विफल रहता है, तो मुझे लगता है कि उसे कानून द्वारा हमारे राज्य सम्मान से इस आधार पर बाहर करना सही होगा कि वह किसी विदेशी से बेहतर नहीं है। क्या आप जानते हैं कि प्लेटो यहाँ क्या कहना चाह रहा है? मुझे प्लेटो के प्रति आपके सम्मान को खत्म करने दें।

प्लेटो कह रहा है कि आप जानते हैं कि आप अपनी पत्नी को धोखा दे सकते हैं, और एक पुरुष के लिए, आप यह सब कर सकते हैं। आम तौर पर, हम सोचते हैं कि ऐसा करना आपके लिए अच्छी बात नहीं है, लेकिन अगर आप ऐसा करने जा रहे हैं, तो आपको यह जानना होगा कि रहस्य कैसे बनाए रखना है। और अगर आप रहस्य नहीं रखते हैं, तो आप समाज में प्रशंसा के पात्र नहीं हैं।

आपको सम्मान नहीं मिलना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जैसे ही आप यह सब कर सकते हैं, ऐसा लगता है कि आजकल हमारे कुछ राजनेता प्लेटो को पढ़ रहे हैं, है न? तो, प्लेटो यूनानियों के उस तरह के ढांचे से आता है, जहाँ यौन अनैतिकता महिला की समस्या है, न कि पुरुष की, और पुरुष के पास इससे बचने के कई तरीके हो सकते हैं। यही कारण है कि यदि आप मेरे कुछ सहकर्मियों के साथ व्याख्यान में बैठें जो प्राचीन यूनानी दर्शन का अध्ययन करते हैं और बाइबिल में गुणों और दोषों की तुलना करते हैं, तो उनमें से कुछ कहेंगे, अरे, बाइबिल में यौन अनैतिकता के बारे में भूल जाओ, क्योंकि पॉल यौन अनैतिकता और जिसे हम व्यभिचार कहते हैं, उसकी निंदा नहीं करता है।

व्यभिचार, पॉल इसकी निंदा नहीं करता। आप ऐसा कर सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि अगर आप ग्रीक धारणा से आते हैं, और वे जो करते हैं वह वही चीज है जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा हूँ।

वे प्लेटो जैसे लोगों से अपील करते हैं कि वे कहें कि पॉल इसी तरह की चीज़ों को आगे बढ़ा रहे हैं, ताकि पुरुष अपनी मर्जी से काम कर सकें। अरे, लेकिन महिलाओं, आप ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकतीं। उन लोगों से सावधान रहें जो ऐसा करना पसंद करते हैं।

कभी-कभी, इनमें से कुछ विद्वानों का अपना निजी एजेंडा होता है। मुझे नहीं लगता कि हमारे ईसाई नैतिकता में, बाइबल एक नैतिक ढाँचा सिखाती है जहाँ पुरुष अपने जीवनसाथी को धोखा दे सकते हैं, और जब तक वे इसे छिपा सकते हैं, या वे यौन रूप से जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन अगर महिलाएँ ऐसा करती हैं, तो वे पाप कर रही हैं, और पुरुष उस मोर्चे पर पाप नहीं कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि पॉल यहाँ यही कह रहा है।

मुझे लगता है कि पॉल यहाँ जो कह रहे हैं वह पुरुषों और महिलाओं दोनों पर लागू होता है। उदाहरण के लिए, मैं आपको यहूदी ढाँचे के बारे में याद दिलाना चाहता हूँ जिसे फिलो ने वास्तव में बहुत अच्छी तरह से समझाया है, जो मुझे लगता है कि पॉल जैसा कोई व्यक्ति जिस ढाँचे की बात कर रहा था। वह कहता है कि अन्य देशों में, युवाओं को 14 वर्ष की आयु के बाद रखैलों और वेश्याओं का उपयोग करने की अनुमति है।

यही बात यूनानियों और रोमियों पर भी लागू होती है। औरतें जो बिना रोक-टोक के अपने व्यक्तित्व से लाभ उठा सकती हैं। लेकिन हमारे बीच, यानी यहूदियों में, वेश्या को जीने की भी इजाज़त नहीं है, बल्कि जो कोई ऐसी ज़िंदगी अपनाता है, उसके लिए मौत की सज़ा तय की गई है।

दूसरे शब्दों में, यहूदी समुदाय में, जहाँ से मुझे लगता है कि पॉल आ रहे हैं, ईसाई समुदाय के भीतर यौन अनैतिकता अस्वीकार्य है। बेशक, वह यह नहीं कह रहा है कि जाओ और किसी को मार डालो, जैसा कि हम यहाँ फिलो का प्रस्ताव देखते हैं, लेकिन यह स्वीकार्य नहीं है। इसलिए, हमें उन व्याख्यानों में जाने के लिए पैसे नहीं देने चाहिए जो हमारे पापपूर्ण जीवन को सही ठहराते हैं।

मुझे लगता है कि पॉल यह कहना चाह रहा है कि जो लोग यीशु मसीह के कानून को जानते हैं, उनके लिए किसी भी तरह की यौन अनैतिकता, लालच, अशुद्धता या अशुद्धता का नाम भी आस्था के समुदाय में नहीं लिया जाना चाहिए। यह उन लोगों के लिए बहुत अनुचित और अस्वीकार्य है जो खुद को न केवल ईश्वर के बच्चे बल्कि ईश्वर के प्यारे बच्चे कहते हैं। हमें उस प्रेम का अनुकरण करना चाहिए जो मसीह ने चर्च में दिखाया है और खुद को नापाक और सभी प्रकार की अनैतिकता के लिए नहीं छोड़ना चाहिए।

धन्यवाद के लिए उन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किया, मैं उस पर संक्षेप में वापस आना चाहूँगा। नए नियम में इस शब्द का 15 में से 12 बार उल्लेख पॉल में मिलता है। पॉल को धन्यवाद के बारे में बात करना पसंद है।

अपने पत्रों की शुरुआत में, वह धन्यवाद कहना पसंद करता है। वह उस गुण को प्रदर्शित करना चाहता है, और ऐसा लगता है कि वह खुद में यह गुण रखता है। पॉल परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए इस भाषा का अधिक उपयोग करना पसंद करता है।

लेकिन यहाँ, हालाँकि, क्योंकि यह एक बड़ा गुण है जो छह बुराइयों के बीच अंतर करता है, भाषा से ऐसा लगता है कि वह एक व्यक्तिगत गुण के बारे में बात कर रहा है जो लोगों के एक-दूसरे के

साथ व्यवहार करने के तरीके में मौजूद होना चाहिए। धन्यवाद कहना सीखें। दूसरे लोगों की दूसरे शब्दों में सराहना करना सीखें।

जब कोई आपको कुछ देता है या आपके लिए कुछ करता है या आपके लिए कुछ करता है, तो हम उस दयालुता के हकदार नहीं हैं जो वे हमें दिखाते हैं। हमें आभारी होना चाहिए। कृतघ्न लोग बहुत मुश्किल हो सकते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि हर कोई उनकी सेवा करने के लिए जीता है और वे परेशानी का कारण बनते हैं।

जिस दुनिया में हम अब रह रहे हैं, कम से कम अमेरिका में तो हम इसे दर्ज कर रहे हैं, मेरे लिए अधिकार एक बड़ा मुद्दा है। जहाँ लोग इतना अधिकार महसूस करते हैं कि कृतघ्नता को पश्चाताप या शर्म की भावना से भी नहीं देखा जाता। कृतज्ञता, धन्यवाद, एक गुण है।

पॉल कहते हैं, कामुकता और भाषण के इन सभी दोषों की तुलना में, उन्हें प्रेम के बारे में बात करने के बाद धन्यवाद को अपनाना चाहिए जो उन्हें प्रदर्शित करना चाहिए। फिलो जैसे कुछ शुरुआती लेखकों ने धन्यवाद के बारे में बात करते हुए इसे इस तरह से रखा, और मूसा ने बहुत ही उचित रूप से कहा कि शिक्षा का फल न केवल पवित्र है बल्कि हर एक गुण के लिए प्रशंसा भी की जाती है। लेकिन सबसे खास है कृतज्ञता, धन्यवाद।

इफिसियों में भी यही यूनानी शब्द इस्तेमाल किया गया है, यूकारिस्टिया, पवित्र। इसलिए, यह जानने के बाद कि हमारे लिए केवल एक ही काम संभव है, जो ईश्वर के सम्मान में योगदान देता है, क्षमा करें, वह है कृतज्ञता प्रदर्शित करना। फिलो का कहना है कि कृतज्ञता सबसे बड़ा महान गुण होना चाहिए जिसका हमें अनुकरण करना चाहिए।

सेनेका ने अपने ग्रंथ में इसे हमारे सभी अनेक और महान दोषों के बीच लाभों के रूप में रखा है। यह व्यक्ति एक रोमन स्टोइक दार्शनिक है, और कृतघ्नता से अधिक सामान्य कोई नहीं है। और यदि आप ग्रंथ को पढ़ेंगे, तो उन्होंने अपने रोमन संदर्भ में कृतज्ञता की कमी के बारे में लगभग शाब्दिक रूप से विलाप करते हुए बहुत समय बिताया और यह कितना बुरा है कि समाज में सामान्य शालीनता नहीं दिखाई जा रही है। पॉल ने कहा कि इफिसुस और उसके आस-पास के चर्च के लिए, धन्यवाद एक ऐसा गुण होना चाहिए जो उनके संदर्भ में स्पष्ट और देखा जा सके, न कि ये सभी पूर्वोक्त दोष।

वह इनमें से कुछ व्यवहारों को विशेष रूप से दोषी ठहराते हैं और उनकी मौजूदगी के खिलाफ चेतावनी जारी करते हैं। वह कहते हैं कि जो लोग यौन अनैतिक और अशुद्ध या लालची हैं उन्हें पता होना चाहिए कि वे ईश्वर और मसीह के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। वाह।

अब, अगर मैंने यह बात चर्च में कही होती, तो लोग बहुत खुश नहीं होते, लेकिन पॉल ने इसे लिखा। जो लोग इस तरह की जीवनशैली जीते हैं और अपने यौन व्यवहार या बोलने के तरीके पर नियंत्रण नहीं रखते, उनके लिए पॉल कहते हैं, वे राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे या परमेश्वर और मसीह के राज्य के वारिस नहीं होंगे। और जैसे ही वह पाँचवीं आयत में आगे बढ़ता है, वह कहता है, क्योंकि तुम निश्चित हो सकते हो, तुम निश्चित हो सकते हो, तुम निश्चित हो सकते हो, कि जो कोई

भी यौन अनैतिक या अशुद्ध है या जो लोभी या लालची है, उसका परमेश्वर और मसीह के राज्य में कोई उत्तराधिकार नहीं है।

और इसलिए, छठी आयत में बड़ी चेतावनी दी गई है। इसलिए, उनके साथ भागीदार न बनें या किसी को भी आपको धोखा न देने दें। ओह, माफ़ करें।

मैं यहाँ पढ़ता हूँ। स्क्रीन पर मत चलो। कोई भी तुम्हें खोखली बातों से धोखा न दे।

इस कारण, परमेश्वर का क्रोध अवज्ञा के पुत्रों पर आ रहा है। वह यह रूपरेखा कहता है, और अब वह एक बड़ा अंतर दिखाने जा रहा है। अपने बड़े अंतर में, पॉल फिर से आ रहा है।

उन्होंने छह सद्गुणों और छह दुर्गुणों की तुलना एक सद्गुण से की है। अब, वे यह स्पष्ट करने जा रहे हैं कि ईसाई दुनिया में अपना जीवन कैसे जीते हैं। और वे ईसाइयों की स्थिति के बीच अंतर करने के लिए प्रकाश और अंधकार का उपयोग करने जा रहे हैं।

और वह उन्हें दिखाएगा कि वे प्रकाश हैं। मसीह के बिना दुनिया अंधकारमय है। और प्रकाश के रूप में, उन्हें एक निश्चित तरीके से जीना चाहिए।

कभी-कभी, जब टिप्पणीकार उन्हें समझा रहे होते हैं, तो वे जो छवियाँ दिखाते हैं, उनमें से कुछ मुझे अस्पष्ट लगती हैं। कभी-कभी, वे इसे इस तरह समझाते हैं जैसे कि प्रकाश कई टॉर्च की तरह घूम रहा हो। नहीं, मुझे लगता है कि पॉल का मुद्दा वही है जिसे मैं आपको दी गई छवि के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा।

अंधकार से भरी जगह, और फिर आप एक प्रकाश स्थापित करते हैं। और प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि यह अंधकार पर विजय प्राप्त करता है और आस-पास के लोगों को दृश्यता प्रदान करता है। वे प्रकाश हैं, और उनके आस-पास की दुनिया अंधकार है।

मैं सातवीं आयत से पढ़ता हूँ। इसलिए, उनके साथ भागीदार मत बनो। क्योंकि एक समय तुम अंधकार थे, लेकिन अब प्रभु में ज्योति हो।

ज्योति की सन्तान के समान चलो। क्योंकि ज्योति का फल सब भली, और सही, और सत्य बातों में पाया जाता है। और यह जानने का प्रयत्न करो कि प्रभु को क्या अच्छा लगता है।

अंधकार के निष्फल कामों में भाग न लो, बल्कि उन्हें उजागर करो। क्योंकि जो काम वे गुप्त रूप से करते हैं, उनके विषय में बोलना भी लज्जा की बात है। परन्तु जब कोई बात ज्योति में उजागर होती है, तो वह दिखाई देती है।

क्योंकि जो कुछ भी दिखाई देता है वह प्रकाश है। इसलिए, यह कहता है, हे सोए हुए, जाग जाओ और मृतकों में से उठो, और मसीह तुम पर चमकेगा। जल्दी से, मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि यहाँ यह विरोधाभास कैसे दिखाई देता है।

वह प्रकाश और अंधकार के बीच स्पष्ट अंतर बताता है, और यदि आप उस परीक्षण का ध्यानपूर्वक पालन करते हैं, तो आप यह भी देखेंगे कि वह तब और अब के बीच कैसे अंतर करता है। वही लोग कभी अंधकार थे, लेकिन अब वे प्रकाश हैं। दूसरे शब्दों में, एक ईसाई बनने के लिए, चीजों को बदलना होगा।

कुछ तो बदलना ही होगा। फिर, वह दिखाता है कि उनके विश्वासी होने से जो पैदा होता है, उसे फल, पेड़ के प्राकृतिक उत्पाद, उनकी पहचान से प्राकृतिक चरित्र और उनके अस्तित्व की भावना के संदर्भ में अधिक स्पष्ट किया जाना चाहिए। और वह प्रकाश के फल, श्लोक 9, की तुलना अंधकार के निष्फल कार्यों से करता है।

प्रकाश का फल यह है कि जब प्रकाश चमक रहा होता है, तो प्रकाश का स्वाभाविक परिणाम सकारात्मक होता है। हालाँकि, वह कहते हैं कि अंधकार, अंधकार में काम करने में यह निष्फलता है। वह कहते हैं कि वे जो काम गुप्त रूप से करते हैं, वे शर्मनाक हैं।

और फिर मैं चाहता हूँ कि आप एक और बात पर ध्यान दें। मुझे पता है कि कभी-कभी मैं इन लैटिन शब्दों को इधर-उधर फेंक देता हूँ। तर्क *ad Verecudiam*, जो वास्तव में एक बहुत ही मुँहफट विद्वानों का तरीका है, यह है कि यदि आप अपने दोस्तों को प्रभावित करना चाहते हैं, तो आप इस तरह के शब्दों का उपयोग करते हैं।

शर्म से तर्क। यह प्राचीन बयानबाजी में तर्क का वह रूप है जिसमें आप वास्तव में तर्क देते हैं कि क्योंकि कुछ बहुत शर्मनाक और शर्मनाक है, इसलिए सभ्य लोगों को उसके करीब नहीं जाना चाहिए। और इसलिए, आप उस विशेष व्यवहार के शर्मनाक, शर्मनाक हिस्से को चित्रित करने में बहुत समय बिताते हैं, ताकि लोगों को उनके सकारात्मक समकक्षों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया जा सके।

पॉल ने तर्क को स्पष्ट किया है। प्रकाश की तरह जियें। यही सही काम है।

इफिसियों में कई बार इस्तेमाल किए गए वचन का इस्तेमाल करते हुए चलें, चलें, आचरण करें, ज्योति के रूप में जिएँ। ज्योति के बच्चों के रूप में जिएँ। और शाब्दिक रूप से, श्लोक 9, क्योंकि ज्योति का फल सब कुछ अच्छा, सही और सत्य में पाया जाता है।

इसके लिए खेद है। प्रकाश का फल उन सभी चीजों में पाया जाता है जो अच्छी, सही और सच्ची हैं। और जब आप ऐसा करते हैं, तो प्रकाश के बच्चों के रूप में चलते हुए, आपको यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि परमेश्वर को क्या पसंद है।

क्या आपको वह मीठी सुगंध वाला हिस्सा याद है जब हमने प्यार के बारे में बात की थी? हाँ। आप समझ सकते हैं कि परमेश्वर को क्या पसंद है। आप सही निर्णय ले सकते हैं।

पद 11 में वह उन्हें एक और सख्त निर्देश देता है। अंधकार के निष्फल कार्यों में भाग न लें। उससे दूर रहें।

लेकिन इसके बजाय, यह आपका काम है। प्रकाश का काम यही है। उन्हें उजागर करो।

क्योंकि जो काम वे गुप्त में करते हैं, उनकी चर्चा करना भी लज्जा की बात है। अंधकार के निष्फल कामों को उजागर करो। जब कोई चीज प्रकाश में उजागर होती है, तो वह दिखाई देती है।

कल्पना कीजिए। कल्पना कीजिए कि आप न्यूयॉर्क शहर जैसे बड़े शहरों में किसी ऐसी जगह पर हैं जहाँ हर तरह की नापाक हरकतें होती हैं। कल्पना कीजिए कि लोग अंधेरे में ड्रग्स लेने की कोशिश कर रहे हैं और हर तरह की अनुचित हरकतें कर रहे हैं।

और कल्पना कीजिए कि आप एक बड़ी रोशनी लेकर आते हैं और लोगों को यह दिखाने के लिए उसे चालू कर देते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी? पॉल का कहना है कि दुनिया अंधकार से भरी हुई है। प्रकाश से कुछ भी उत्पन्न नहीं होता, लेकिन अस्तित्व का सार फलदायी होता है।

इसलिए, अंधकार के निष्फल कार्य। प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने वालों के लिए, हमारी स्थिति उससे बेहतर है। हम प्रकाश की संतान हैं जो अंधकार से आए हैं।

और हमारे जीवन में, ध्यान दें कि अब तक, उन्होंने केवल दो गुणों पर प्रकाश डाला है, लेकिन उन्होंने उन्हें इतने शक्तिशाली तरीके से किया है कि यह दिखाया है कि प्रेम के गुण को मसीह के अनुरूप होना चाहिए। और फिर, जब उन्होंने धन्यवाद का परिचय दिया, तो उन्होंने इसकी तुलना छह बुराइयों से की। जब ये गुण अपरिहार्य होते हैं, तो वे प्रकाश के इन लोगों, प्रकाश के इन बच्चों, अर्थात् विश्वासियों को चमका सकते हैं।

और जब वे चमकते हैं, तो उन्हें परिणाम के लिए तैयार रहना चाहिए। परिणाम यह है कि वे अंधकार के निष्फल कार्यों को उजागर करते हैं। और जो पॉल नहीं कहता है, मैं उसे जोड़ूंगा कि जब आप अंधकार के निष्फल कार्यों को उजागर करते हैं, तो अलोकप्रिय न होने के लिए तैयार रहें।

अलोकप्रिय होने के लिए तैयार रहें। विरोध का सामना करने के लिए तैयार रहें। लोगों द्वारा आपको तरह-तरह के नामों से पुकारे जाने के लिए तैयार रहें।

ऐसे लोग हैं जो हाई स्कूल या कॉलेज जाते हैं लेकिन ईसाई नहीं हैं। वे ईसाई जीवन जीते हैं। उनका मज़ाक उड़ाने के लिए उन्हें पादरी कहा जाता है।

उपहास के लिए तैयार रहें। मैंने संस्थानों में ऐसी कहानियाँ सुनी हैं जहाँ युवा ईसाई लड़कियों को कुंवारी होने के कारण उपहास का पात्र बनाया जाता है। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? सिर्फ हल्का होने से, आप उन्हें अंदर तक उजागर कर देते हैं, और यह उन्हें प्रभावित करता है।

आपका अस्तित्व ही उन्हें यह एहसास कराता है कि आप उन्हें उस हद तक उजागर कर रहे हैं जहाँ वे नहीं होना चाहते। और वे हर तरह से प्रतिक्रिया करते हैं। पॉल, मुझे पद 14 में दी गई चेतावनी पसंद है।

क्योंकि जो कुछ भी दिखाई देता है वह प्रकाश है। इसलिए, यह कहता है, हे सोए हुए, जाग जाओ और मृतकों में से उठो, और मसीह तुम पर चमकेगा। उन विश्वासियों के लिए जो नींद में हैं, उन विश्वासियों के लिए जो मेरी एक बेटी के साथ हैं जो सुबह जल्दी नहीं उठती, वह जागती है, और वह ऐसे चलती है, और मुझे उसे चिढ़ाना पसंद है, और मैं कहता हूँ, तुम जानती हो, तुम चाहती हो कि हम तेज सैर पर जाएँ या कुछ और, और वह बस ऐसे ही कहेगी, नहीं।

इसलिए, जब मैं सुबह उसके साथ कुछ काम करना चाहता हूँ, तो मुझे सुबह उठकर चाय बनाने की कोशिश करनी पड़ती है। मैं कुछ गर्म पानी लेकर आता हूँ ताकि मैं अपने लिए चाय बना सकूँ। और फिर जब वह वापस आती है, तो मैं कहता हूँ, अब तुम अपनी चाय पी सकती हो।

चाय खत्म करने के बाद वह पूरी तरह जाग जाती है। लेकिन उससे पहले, वह कहती है, कुछ ईसाई अपने जीवन में ऐसे ही जीते हैं। हम चमक नहीं पाते।

पॉल इन उद्धरणों को यहाँ लाते हुए कहता है: उठो, हे सोए हुए, तुम मसीही जो लगभग नींद में हो। क्या तुम इस शब्द को ऐसे ही कहते हो? जो नींद में है या कुर्सी पर गिरने जैसा महसूस कर रहा है, लगभग नीचे गिर रहा है? जिसका सिर आगे-पीछे हो रहा है।

उठो, खड़े हो जाओ, चमको। चमको ताकि तुम कुछ अलग कर सको। मृतकों में से उठो और मसीह तुम पर चमकेगा।

अब, मैंने केवल एक या दो टिप्पणीकारों को सुना है जो इसे अविश्वासियों पर लागू करने का प्रयास करते हैं, कहते हैं, यदि आप इस तरह चमकते हैं, तो आप अपने जीवन के तरीके से दुनिया के बाकी हिस्सों में सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं। लेकिन मुझे यह उद्धरण पसंद है, जैसा कि हम इस विशेष सत्र को समाप्त करते हैं, जो पॉल ने कहा है। और इसलिए आइए इसे पढ़ते हैं।

आइए पढ़ते हैं कि रोमियों के अध्याय 13 की आयत 11 से 14 में पौलुस ने क्या कहा है और यहाँ से पौलुस ने कौन से विषय चुने हैं। जब आप ये काम करते हैं, तो उस समय को ध्यान में रखें जिसमें हम रह रहे हैं। आपके लिए अपनी नींद से जागने का समय आ गया है।

हमारा पूर्ण उद्धार अब उस समय से कहीं अधिक निकट है जब हमने पहली बार मसीह पर विश्वास किया था। बुराई की अंधेरी रात लगभग समाप्त हो चुकी है। मसीह की वापसी का दिन लगभग आ गया है।

तो, आइए हम अंधकार के कामों से छुटकारा पाएँ। आइए हम ज्योति के कवच को धारण करें। आइए हम वैसा ही व्यवहार करें जैसा हमें करना चाहिए, जैसे दिन के समय जीने वाले लोगों को जंगली पार्टियों से कोई लेना-देना नहीं होता।

नशे में न रहें। यौन पाप या बुरे आचरण में भाग न लें। एक दूसरे से न लड़ें।

किसी से ईर्ष्या मत करो। इसके बजाय, प्रभु यीशु मसीह को अपने वस्त्र के रूप में पहन लो। अपने पापी स्वभाव की इच्छाओं को कैसे पूरा किया जाए, इस बारे में मत सोचो।

थिस्सलुनीकियों 5:4 और 7 में भी यही चित्रण है। हे भाइयो और बहनो, तुम अंधकार में नहीं हो। इसलिए उस दिन तुम पर चोर की तरह आश्चर्य न हो।

आप सभी प्रकाश की संतान हैं। आप दिन की संतान हैं। हम रात के नहीं हैं।

हम अंधकार से संबंधित नहीं हैं। इसलिए हमें दूसरों की तरह नहीं बनना चाहिए। वे सो रहे हैं।

इसके बजाय, हमें पूरी तरह से जागते रहना चाहिए और खुद पर पूरा नियंत्रण रखना चाहिए। जो लोग सोते हैं, वे रात को सोते हैं। जो लोग नशे में हैं, वे रात को नशे में हैं।

सभी सोये हुए लोगों, जाग जाओ। हाँ। प्यारे बच्चों के लिए और प्यारे बच्चों की तरह जीने के लिए, हमें यह समझने के लिए आग्रह किया जाता है कि हम न केवल परमेश्वर के प्यारे बच्चे हैं, बल्कि हमें इस हद तक प्यार किया जाता है कि हमें परमेश्वर के जीवन का अनुकरण करने के लिए भी बुलाया जाता है।

इसका आदर्श स्वयं मसीह है। इसे सफलतापूर्वक करने के लिए, हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि हमें क्या नहीं करना चाहिए। छह बुराइयाँ सूचीबद्ध की गई हैं।

यौन व्यवहार की बुराइयाँ और बोलने के तरीके में बुराइयाँ। पॉल कहते हैं कि ये सब उचित नहीं हैं। ये शर्मनाक हैं और हमें इनका नाम भी नहीं लेना चाहिए।

और उन्होंने कहा, इसके विपरीत, हमें धन्यवाद से भर जाना चाहिए। फिर वह स्पष्ट कल्पना दिखाते हैं जो हमें अविश्वासी के जीवन और आस्तिक के जीवन के बीच एक स्पष्ट अंतर खींचने में मदद करेगी, अर्थात् प्रकाश और अंधकार। और अगर हम सो रहे हैं, तो वह हमारे अंदर सोए हुए व्यक्ति को जगाते हुए कहता है कि चलो उठें।

आइए हम उस बुलावे के लायक जीवन जिएँ जो हमें मिला है। आइए हम ऐसा जीवन जिएँ जो वास्तव में दुनिया को दिखाए कि हमने एक अच्छे ईश्वर, एक धार्मिक ईश्वर, एक पवित्र ईश्वर का अनुभव किया है, और हमें प्यार किया गया है ताकि हम प्यार कर सकें। मुझे उम्मीद है कि जब आप इस बारे में सोचेंगे और जब हम अपने अगले व्याख्यान में अध्याय 5 के बाकी हिस्सों को चुनेंगे, तो आप खुद से पूछना शुरू कर देंगे, क्या मैं अभी भी अंधेरे में हूँ? और अगर ऐसा है, तो मुझे प्रकाश में क्यों नहीं आना चाहिए? या मैं अभी भी सो रहा हूँ? जब मैं अविश्वासियों के बीच होता हूँ तो मैं क्या फर्क कर रहा हूँ? क्या वे मेरे साथ कुछ अलग देखते हैं? या क्या मैं गिरगिट की तरह व्यवहार करता हूँ कि जब मैं अविश्वासियों के बीच होता हूँ तो मैं उनके जैसा बनने की कोशिश करता हूँ? नहीं, प्रकाश और अंधकार एक साथ होने की कोशिश नहीं करते।

प्रकाश चमकता है और अंधकार को उजागर करता है। और मैं आशा करता हूँ कि आप और मैं जो 21वीं सदी में भी इस आह्वान पर ध्यान देते हैं और ईश्वर की कृपा से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास

करते हैं ताकि इस जीवन को ईश्वर के बच्चों के रूप में प्रकाश में प्रदर्शित किया जा सके जिन्हें प्रकाश में फल लाना चाहिए। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद और ईश्वर आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा जेल पत्रों पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 28 है, परमेश्वर के प्रिय बच्चों, इफिसियों 5:1-21।